विश्व स्तनपान सप्ताह

(01 से 07 अगस्त, 2022)

bpni
putting child nutrition at the forefront of social change

भारत में स्तनपान मित्रवत अस्पताल

FOCUS: Breastfeeding Friendly Hospitals in India (BFHI-India)

https://bfhi-india.in/

लक्ष्य : विश्व स्तनपान सप्ताह 2022

1. नीति निर्माताओं और अधिकारियों का ध्यान भारत के स्तनपान मित्रवत अस्पतालों की तरफ खींचना।
2. डिलीवरी कराने वाले अस्पतालों को स्तनपान मित्रवत बनने को प्रेरित करना।
3. स्वास्थ्य कर्मी, स्तनपान सम्बन्धित कौशलः (Lactation Management Skills) में प्रवीण हो ताकि वे मॉ का मार्गदर्शन (Counselling) कर सके।

स्तनपान मित्रवत अस्पतालों पर हमारा ध्यान (FOCUS) क्यों है ?

भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (MOHFW), विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) तथा यूनिसेफ की अनुशंसा के अनुसार : -

1. स्तनपान जन्म के 1 घंटे के अन्दर शुरु करें।
2. प्रथम छः माह तक सिर्फ स्तनपान।
3. छः माह के बाद उचित अनुपूरक आहार शुरु करें तथा स्तनपान 2 साल या उससे अधिक तक जारी रखें। उचित आहार देने से कुपोषण, ज्यादा वजन (Overweight), मोटापा तथा टाइप-2 मधुमेह, दिल की बीमारियों तथा कुछ कैंसर का खतरा कम (NCDS) हो जाता है।

एक अर्न्तराश्ट्रीय शोध के अनुसार पर्याप्त स्तनपान नहीं करवाने से भारतवर्ष में प्रतिवर्ष 1 लाख शिशुओं की मृत्यु हो जाती है (डायरिया तथा न्यूमोनिया से), जिसे रोका जा सकता है। 3.7 करोड़ डायरिया के केस, 24 लाख न्यूमोनिया तथा 4.382 मोटापे के केस होते हैं। स्तनपान न करवाने से माताओं पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। प्रतिवर्ष 7000 केस स्तन कैन्सर, 1700 अंडाशय के कैन्सर तथा 87000 टाइप-2 मधुमेह के केस होते हैं। भारत में इसके इलाज पर प्रतिवर्ष 10.605 करोड़ डालर खर्च होते हैं।

इतने फायदों के बावजूद, भारतवर्ष में स्तनपान की दर कम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अगर 'दस कदम' मैटरनिटी अस्पतालों में लागू कर दिये जायें तो स्तनपान की दर बढ़ जायेगी। 58 शोधों के अनुसार, जो मातृत्व एवं शिशुओं की देख-भाल पर 2016 में हुये, यह दिखाते हैं कि 'दस कदम' लागू करने से निम्न फायदे होते हैं:-

- स्तनपान जल्दी शुरु हो जाता है।
- केवल स्तनपान की दर बढ़ जाती है।
- स्तनपान लम्बे समय तक जारी रहता है।

भारत में अपर्याप्त स्तनपान के नुकसान (प्रतिवर्ष)

बच्चों की मृत्यु (जो बच सकती है)
100,000

डायरिया केस
34,791,524

न्यूमोनिया केस
2,470,429

मोटापा
40,382

स्तन कैंसर
7,976

अंडाशय कैन्सर
1,748

टाइप-2 मधुमेह
87,855

इलाज का खर्च
10.605 करोड़ डालर
(करीब 848 करोड़ रुपये)

कमियां, चुनौतियां, बाधायें

राष्ट्रीय पारिवारिक सर्वेक्षण (NHFS-5) ने 2021 में बताया कि 88.6 प्रतिशत माताओं की डिलिवरी अस्पतालों में होती है, परन्तु सिर्फ 41.6 प्रतिशत 1 घंटे में स्तनपान शुरु करवा पाती हैं। 1 घंटे मे स्तनपान धीरे-धीरे बढ़ा है।

NHFS-1 (1992-93) 9.5%
NHFS-5 (2019-21) 41.6%

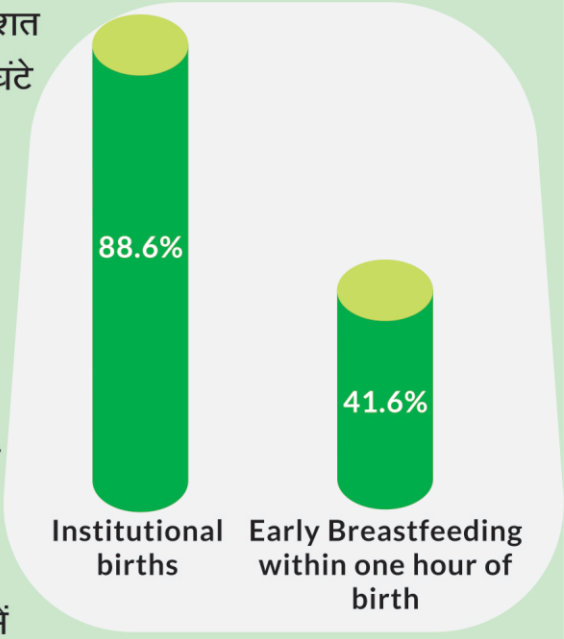

लेकिन 18 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में यह घटा है। NHFS-4 तथा NHFS-5 में यह दर समान है, जो चिन्तनीय है। यह साबित करता हैं कि हमारा स्वास्थ्य तंत्र स्तनपान जल्दी शुरु करवाने में उदासीन है।

अतः इस बात की जरुरत है कि, बाधाओं को दूर करके शीघ्र स्तनपान की दर बढ़ायी जाय। हमें नार्मल डिलीवरी से लेकर आप्रेशन वाली माताओं की मदद करनी होगी।

विश्व बैंक (World Bank) ने 2014 में एक शोध किया। ''दक्षिण एशिया में शिशु मित्रवत अस्पताल - एक पहल (BFHI) : सफल स्तनपान के दस कदम, भारत, नेपाल तथा बांगलादेश, चुनौतियां और अवसर'' निष्कर्ष था कि भारतवर्ष में इस पर पर्याप्त ध्यान नही दिया जाता।

चुनौतियां (शोध के अनुसार)

1. BFHI का कोई माई बाप नही है तथा कोई आर्थिक सहायता नही।
2. मानव संसाधनों की कमी ।
3. स्वास्थ्य केन्द्रों पर अत्यधिक दबाव।
4. कमजोर निगरानी एवं मूल्यांकन तंत्र।
5. प्राइवेट अस्पतालों को न जोड़ पाना।
6. अंतराष्ट्रीय कोड का लागू नहीं होना।
7. तकनीकी सहायता देने एवं नेतृत्व प्रदान करने का तंत्र न होना।

बाधायें (Barriers)

1. मैटरनिटी अस्पतालों में बच्चे को मॉ से अलग रखना, विशेष तौर पर सीजेरियन डिलीवरी में ! यह प्राइवेट अस्पतालों में ज्यादा है।
2. अप्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी।
3. डिब्बे के दूध का इस्तेमाल ! यह डिब्बा बन्द दूध की कम्पनियों के प्रभाव से होता है।
4. गर्भावस्था तथा डिलीवरी के बाद मॉ की मदद न करना।
5. सीजेरियन से डिलीवरी में बढ़ोत्तरी:-

भारतवर्ष में पिछले 5 सालों में 47.4 प्रतिशत प्राइवेट अस्पतालों 14.3 प्रतिशत सरकारी चिकित्सालयों में आपरेशन से डिलीवरी होती है। इससे स्तनपान में बाधा होती है क्योंकि मॉ को पर्याप्त मदद नहीं मिलती है।

मॉ कार्यक्रम के माध्यम से भारत सरकार का स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा निर्देशित एवं संसोधित ''दस कदम सफल स्तनपान की ओर'' अस्पतालों से यह गुजारिश करते हैं कि वे आई0एम0एस0 अधिनियम 1992 को लागू करें। लिखित स्तनपान की नीति बनायें, जानकारी तंत्र (Data Management System) बनायें, स्टाफ को प्रशिक्षित करें, गर्भावस्था में मॉ का मार्गदर्शन करें तथा डिलीवरी के बाद स्तनपान शुरु करने में मदद करें। मॉ-बच्चे को साथ रखें तथा कोई अन्य पेय पदार्थ न दें।

लेकिन मॉ कार्यक्रम प्राइवेट अस्पताल तक नहीं पहुँचता है।

नई आशा - बी0एफ0एच0आई0 (BFHI India)

माँ को स्तनपान की सफल यात्रा पर ले जाने के लिये तथा अस्पतालों में स्तनपान सम्बन्धित बेहतर कार्य हेतु 'स्तनपान मित्रवत अस्पताल' होने चाहिए। ब्रेस्ट फीडिंग नेटवर्क आफ इण्डिया (BPNI) ने एसोसियेसन आफ हेल्थ केयर प्रोवाइडर्स आफ इण्डिया (AHPI) के साथ एक गठजोड़ किया है ताकि अस्पतालों का प्रत्यायन (Accreditation) स्तनपान मित्रवत अस्पताल हेतु किया जा सके। 13 संस्थानों ने मिलकर इसमें मदद किया है। इस गठजोड़ का उद्देश्य अस्पतालों पर ध्यान केन्द्रित करना है, ताकि स्तनपान शीघ्र शुरु करवाने हेतु बेहतर स्तर की देख-भाल मिले तथा 1 घंटे के अन्दर माँ एवं नवजात शिशु का त्वचा से त्वचा का सम्पर्क आरम्भ हो जाय।

Dr Gridhar Gyani, DG, AHPI and Dr Arun Gupta of BPNI signing the MOU

इस कार्यक्रम में BPNI ने समनव्यक की भूमिका निभायी है। इसमें इन तरीकों (Tool) का इस्तेमाल किया गया है जो (MOHFW) तथा (WHO) ने विकसित किये तथा टेस्ट किये। इसके लिये टेक्निकल एडवाइजरी ग्रुप (TAG) का मार्गदर्शन मिला। जिसके अध्यक्ष तत्कालीन कमिशनर आफ चाइल्ड हेल्थ थे। (2019 में) इसके लिये एक राष्ट्रीय प्रत्यायन केन्द्र (Accreditation Centre) बनाया गया है। यह मैटरनिटी केन्द्र वाले अस्पतालों का उचित कीमत में प्रत्यायन करता है। यह केन्द्र BPNI में है। इस प्रत्यायन की प्रक्रिया में स्व-मूल्यांकन तथा बाहर की संस्था द्वारा स्वतंत्र मूल्यांकन किया जाता है। एक बार प्रत्यायन हो जाने के बाद यह 3 साल तक मान्य रहता है। इसे 2021 में शुरु किया गया आज तक 2 मैटरनिटी अस्पतालों का प्रत्यायन हो चुका है तथा 20 अस्पतालों ने आवेदन किया है।
यह कार्यक्रम धीरे-धीरे बढ़ रहा है।

BPNI तथा AHPI इस प्रत्यायन के लिये अस्पतालों को प्रेरित करते हैं।
कृपया https://bfhiindia.in/home.php पर क्लिक करें।

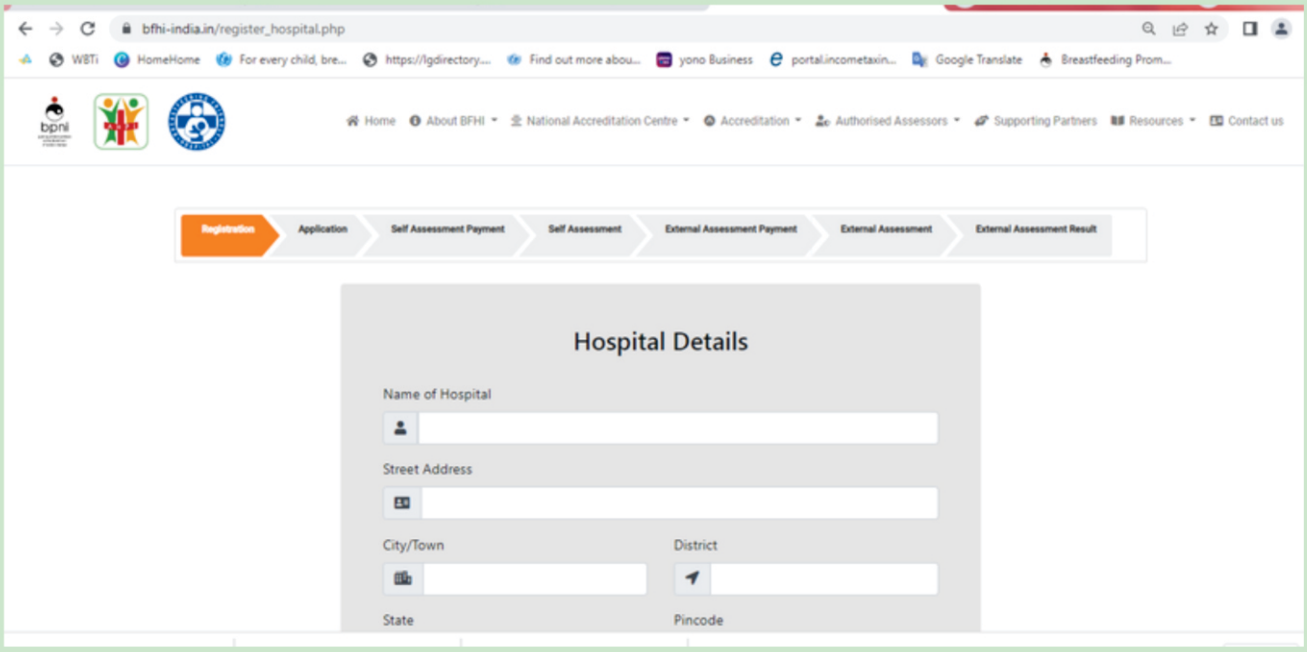

सफल स्तनपान के दस कदम

महत्वपूर्ण प्रबन्धन प्रक्रियाएं

1a. सभी चिकित्सालयों में विश्व स्वास्थ्य असेम्बली द्वारा निर्देशित अर्न्तराष्ट्रीय दुग्ध विक्रेताओं पर लागू आई0एम0एस0 एक्ट का पूर्णतः पालन करना।

1b. सभी चिकित्सालयों द्वारा लिखित रुप से शिशु आहार नीति का निर्धारण करके सभी स्वास्थ्यकर्मीयों एवं पालकों को जानकारी प्रदान करना।

1c. शिशु के वजन/लम्बाई के डेटा के निरन्तर आंकलन एवं प्रबन्धन की व्वयस्था करना।

2. सभी स्वास्थ्यकर्मीयों को स्तनपान सम्बन्धित ज्ञान, क्षमता एवं कौशल में प्रशिक्षित करना।

प्रमुख क्लीनिकल अभ्यास

3. गर्भवती माताओं एवं उनके परिजनों के साथ स्तनपान के महत्व व प्रबन्धन की चर्चा करना।

4. जन्म के तुरन्त बाद माताओं को तुरन्त व लगातार त्वचा से त्वचा स्पर्श करवाने और स्तनपान शुरु करने हेतु प्रेरित करना।

5. स्तनपान शुरु करने, जारी रखने और समस्याओं के निवारण करने में माताओं की मदद करना।

6. अत्यंत विकट स्थिति में चिकित्सक की सलाह के बिना मॉ के दूध के अलावा अन्य भोजन व पेय पदार्थ (शहद, पानी आदि) नहीं दिलवाना।

7. यह सुनिश्चित करना कि मॉ और शिशु लगातार 24 घण्टे एक ही कमरे में साथ-साथ रहें।

8. मांताओं को शिशु के भुखे होने के इशारों को पहचानना और उनके आधार पर निर्णय लेना सिखाना।

9. माताओं को बोतल, चुसनी आदि का प्रयोग से होने वाले नुकसान की जानकारी देना।

10. व्यवस्था रखना की पालक व शिशु की फालोअप के रुप में सतत सेवायें मिलती रहें।

ACTION IDEAS

- Highlight the gap in institutional delivery and early breastfeeding rates in each State and reach out to media. Resources are available https://www.bpni.org/world-breastfeeding-week-2022/
- Identify a hospital with maternity facility in your area and introduce the Breastfeeding Friendly concept to them. Download the the brochure and poster here. https://bfhi-india.in/home.php
- Organise webinar/seminar or a meeting, to make local hospitals aware of the 'Breastfeeding Friendly' Hospital accreditation programme. Ask for support from BPNI.
- Call upon your District Magistrate to encourage all hospitals to go for accreditation as Breastfeeding Friendly.
- Write a letter to the State government, your area Member of Parliament, and political party to call for support to BFHI India
- Demand from the maternity hospitals to have competent staff in lactation management and breastfeeding counselling

bpni
putting child nutrition at the forefront of social change

IBFAN
defending breastfeeding

Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI)

Address: BP-33, Pitampura, Delhi 110 034. Tel: +91-11- 42683059

bpni@bpni.org

http://www.bpni.org

@bpniindia

@bpni.org

https://www.youtube.com/user/bpniindia

idecide4me

ABOUT BPNI

The Breastfeeding Promotion Network of India (BPNI) is a 30 years old registered, independent, non-profit, national organisation that works towards protecting, promoting and supporting breastfeeding and appropriate complementary feeding of infants and young children. BPNI works through policy analysis, advocacy, social mobilization, information sharing, education, research, training and monitoring the company compliance with the IMS Act. BPNI serves as the global secretariat for World Breastfeeding Trends Initiative (WBTi) programme, that analyses policy & programmes and galvanises action at country level in different regions of the world. BPNI is part of the International Baby Food Action Network (IBFAN)

BPNI's ETHICAL POLICY

BPNI does not accept funds or any support from the companies manufacturing baby foods, feeding bottles or infant feeding related equipments. BPNI does not associate with organizations having conflicts of Interest. BPNI request everyone to follow this ethical stance while celebrating World Breastfeeding Week.

Written and edited by: Nupur Bidla
Reviewed by : Dr. Arun Gupta
Designed by : Amit Dahiya

हिन्दी अनुवाद - डी. बी.बी. गुप्ता, डा. के.पी. कुशवाहा, गोरखपुर
सहयोग - डा. महिमा मित्तल, श्री प्रवीण दुबे, AIIMS गोरखपुर